सामुदायिक रेडियो का आदिवासियों पर प्रभाव
(रेडियो केन्द्र नालछा के विशेष संदर्भ में)

साकेत रमण , निरंजन कुमार

सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विवि, इंदौर
एम. फिल शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विवि, इंदौर

सारांश :

सामुदायिक रेडियो से तात्पर्य है एक समुदाय विशेष की आवश्यकताओं के मुताबिक छोटे भूभाग पर रेडियो प्रसारण। परंतु शर्त यह है कि इस प्रकार प्रसारित होने वाले कार्यक्रम तैयार करने में समुदाय कि भूमिका होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में अगर कहें तो समुदाय द्वारा समुदाय की जरूरतों को पूरा करने लिए समुदाय का प्रसारण। वैसे तो आजादी से पहले भी देश में सामुदायिक रेडियो ने अपनी भूमिका निभाई थी। हालांकि उसका स्वरूप अलग प्रकार का था। मूलतः उनका फोकस कृषि था। परंतु सन् 1995 में सर्वोच्च न्यायालय ने व्यवस्था दी थी कि "वायु तरंगें जनता कि संपत्ति हैं और सार्वजनिक हित के कार्यों के लिए उनका इस्तेमाल अवश्य किया जाना चाहिए।" उच्चतम न्यायालय के इस फैसले ने भारत में सूचना संप्रेषण के स्वरूप में आमूल–चूल परिवर्तन किए। आज हम एक ऐसे दौर में है जहां जनता कि जरूरतों की पूर्ति के कई सूचना साधन हमारे पास मौजूद है।

प्रस्तावना:

मूलतः सामुदायिक रेडियो टेलिकास्टिंग के विपरीत नैरोकॉस्टिंग की अवधारणा पर आधारित है। जिसमें एक निश्चित दायरे की आवश्यकता के अनुरूप प्रसारण को महत्व दिया जाता है। अगर सामुदायिक रेडियो के विकास–यात्रा की बात करें तो 2003–04 में पहली बार सामुदायिक रेडियो नीति–निर्देश जारी किए गए। आज के समय में सामुदायिक रेडियो का महत्व बढ़ गया है क्योंकि हर समुदाय अपने आस–पास के बारे में जानने कि कोशिश करता है तथा अपनी ही बोली व भाषा में सबकुछ सुनना पसंद करता है। आज के समय में सरकार अपनी नीतियों को जनता तक पहुँचाने के लिए उनकी बोली व भाषा में कार्यक्रमों का प्रसारण करके उन्हें शिक्षित व जागरूक करने में लगी है। साथ ही सामुदायिक रेडियो मनोरंजन का सस्ता व आसानी से उपलब्ध साधन भी है। भारत में रेडियो पसारण की शुरूआत 1923 में बंबई में रेडियो क्लब की स्थापना के साथ हुई। ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना 1936 में हुई थी। उसके बाद देश में रेडियो प्रसारण ने सफलता के नए–नए मुकाम बनाएं।

सन् 2002 के बाद नैरोकॉस्टिंग के बढ़ते प्रभाव के कारण सामुदायिक रडियो विकास में महती भूमिका निभा रहा है। सामुदायिक रेडियो के माध्यम से हम किसी भी वर्ग या जाति के लोगों की समस्याओं को सुन व निराकरण भी कर सकते हैं। आज के समय में सामुदायिक रेडियो आदिवासियों के लिए लाभकारी साबित हो रहा है। आज के समय में सामुदायिक रेडियो आदिवासियों के लिए एक शिक्षक के रूप

में अपना कार्य कर रहा है। जिसके कारण आज गांवों या कस्बों में रहने वाले आदिवासियों का विकास तेजी से हो रहा है। सामुदायिक रेडियो भविष्य में और अधिक लाभकारी साबित होगा तथा समाज के वंचित वर्ग को अभिव्यक्ति का एक बेहतर मंच उपलब्ध करायेगा। मध्यप्रदेश सरकार ने आदिवासियों के विकास की अपनी महत्वाकांक्षी योजना के तहत राज्य के सभी आदिवासी बहुल इलाको में सामुदायिक रेडियो केन्द्र स्थापित करने की योजना पर काम कर रही है। सरकार ने इस कड़ी में वन्या के सहयोग स कई केन्द्र स्थापित किए है जो बहुत ही बेहतर तरीके से अपना कार्य संपादित कर रहे है।

रेडियो केन्द्र नालछा–एक परिचयः

मध्य प्रदेश सरकार ने अपनी महत्वाकांक्षी योजना के तहत राज्य में लगभग 100 कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन प्रारंभ करने की योजना बनायी थी। जिसके तहत वन्या के सहयोग से धार जिले के 'नालछा' में 90.8 "सामुदायिक रेडियो नालछा" खोला गया है यह भीली बोली का रेडियो है जो आदिवासियों के विकास व उन्नति के लिए खोला गया है। हालांकि यह केन्द्र अभी ट्रायल केन्द्र के रूप में ही पिछले 2 सालो से कार्य कर रहा है। इसकी गूंज माण्डू के महलों में भी गूंजती है। हर दिन वहां के आदिवासी लोग इस सामुदायिक रेडियो पर खेती किसानी, बालसभा, गीत संगीत, नाटक, भेटवार्ता सुनते है। जिसके कारण वहां के लोगों का मनोरंजन भी हो रहा है और साथ ही विकास भी। इस रेडियो केन्द्र की गूंज 25 किलोमीटर है। नालछा के आदिवासी हर दिन अलग–अलग गीत संगीत व आदिवासी संगीत अपनी बोली में सुनते है।
आज के समय म आदिवासियों के लिए मीडिया का सबसे अच्छा माध्यम कम्युनिटी या सामुदायिक रेडियो ही है। इस रेडियो केन्द्र का संचालन आदिम जाति कल्याण विभाग वन्या मध्य प्रदेश द्वारा किया जा रहा है यह हर दिन अलग–अलग ज्ञानवर्धक कार्यक्रम बनाकर उनका प्रसारण आदिवासियों में कर रहा है। वसे तो वहां पर कई समाचार–पत्र, समाचार चैनल व निजी समाचार चैनल का प्रसारण होता है। लेकिन वहां के आदिवासी अपनी ही बोली में किसी भी बात को आसानी से समझ सकते हैं। नालछा में पहले भी कई जनमाध्यमों की पहुंच थी लेकिन उनका प्रभाव आदिवासियों पर कम पड़ा था। क्योंकि एक तो आदिवासियों में शिक्षा का नितांत अभाव है जिससे वे समाचार–पत्र, पत्रिकाएं पढ़ नहीं सकते। और ना ही टेलीविजन सेट एवं केबल कनेक्शन लेने में वे सक्षम है। लेकिन जब से सामुदायिक रेडियो केन्द्र खोला गया, वहां के आदिवासियों में रेडियो के प्रति रूचि उत्पन्न हुई। और वे नियत समय पर अपना आदिवासी रेडियो सुनना पसंद कर रहे हैं। अगर सरकार चाहे तो इसके माध्यम से अपनी सारी नीतियों आदिवासियों तक पहुॅचा सकती है और उनका भी विकास कर सकती है। नालछा में सप्ताह में एक दिन हाट या बाजार लगता है जहां पर आदिवासी महिलाएं रंग–बिरंगी साड़ियों में सजधज कर आती है और पुरूष भी रंग–बिरंगे कपड़ों में आते हैं। अगर इस समयावधि को फोकस कर विशेष कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाएं तो क्षेत्र के विकास प्रक्रिया को एक नई दिशा दी जा सकती है।

केन्द्र के प्रमुख प्रसारणः

इस केन्द्र से प्रसारित कार्यक्रमों की खास पहचान स्थानीय बोली को फोकस कर कार्यक्रमों का निर्माण है। हालांकि केन्द्र ट्रायल के तौर पर ही कार्य कर रहा है परंतु क्रमशः इसकी लोकप्रियता में इजाफा हो रहा है। प्रसारण का समय प्रातः 7:30 से दोपहर 12:30 एवं शाम में 4:00 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक है। केन्द्र से प्रतिदिन कुल 10 घंटे प्रसारण किया जाता है। कार्यक्रमों में भीली भाषा के साथ स्थानीय हिंदी के मिले–जुले शब्दों को प्रयोग किया जाता है। कुछ प्रमुख कार्यक्रम–ः

बढ़ते कदम– कार्यक्रम का निर्माण भोपाल से होता है।
स्थानीय बोली में भेटवार्ता।
स्थानीय प्रतिभाओं का साक्षात्कार।
खेती–किसानी।

स्थानीय बोली में भजन।
स्वास्थ्य संबंधी भेटवार्ता।
लोकगीत।

अध्ययन के उद्दे□यः

- ✓ **नालछा** सामुदायिक रेडियो के प्रसारण से आदिवासियों में उत्पन्न जागरूकता का अध्ययन करना।
- ✓ **सामुदायिक** रेडियो के प्रभाव से आदिवासियों के जीवनशैली एवं समझ के स्तर में हुए परिवर्तन का पता लगाना।

अध्ययन प्रविधिः

सैंपल सर्वे– अनुसंधान समस्या की वैशेषिक प्रकृति को देखते हुए अनुसंधान प्रविधि का चयन करना बहुत ही जटिल कार्य था क्योंकि प्रविधि अगर उचित नहीं हो तब समस्या का अध्ययन सार्थक तरीके से नहीं किया जा सकता। इस कारण इस अध्ययन के लिए सैंपल सर्वे का चुनाव किया गया। जिसके माध्यम से उत्तरदाताओं की जागरूकता के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया।
निद□र्न– अनुसंधान आवश्यकताओं को देखते हुए सैपलिंग भी बहुत ही अहम होती है। क्योंकि अनुसंधान समस्या की प्रकृति वैशेषिक थी अतः निदर्शन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग किया गया एवं इसी के माध्यम से उत्तरदाताओं का चयन किया गया। इस प्रकार के अध्ययन में सबसे बड़ी समस्या होती है उत्तरदाता के चयन की, क्योकि सभी जनजातीय समुदाय के सभी श्रोता बात करने को तैयार हो या फिर इस प्रकार के शोध के लिए समय दें, यह संभव नहीं होता है। ऐसे में दूसरे स्तर पर अध्ययन के लिए सुविधाजनक निदर्शन का प्रयोग किया गया, ऐसा करना शोध की आवश्यकता के अनुरूप और प्रासंगिक था। अतः हमने वैसे लागों को ही अध्ययन में शामिल किया जो श्रोता भी थे और बात करने के लिए तैयार भी थे। इस प्रकार से अध्ययन के लिए जनजाति समुदाय से **100 उत्तरदाताओं का सुविधाजनक निद□र्न विधि** के माध्यम से चयन किया गया।
उपकरण–इस अध्ययन में आंकड़ों के संकलन के लिए अनुसूची का प्रयोग करना प्रासंगिक जान पड़ा क्योकि ज्यादातर उत्तरदाता अशिक्षित थे जो प्रश्नों को समझकर उसका उत्तर देने में असमर्थ थे।

आंकड़ों की विवेचनाः

अध्ययन के लिए चयनित सैंपल सर्वे प्रविधि के माध्यम से उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचनाओं के माध्यम से समस्या के स्वरूप एवं प्रकृति की विवेचना का प्रयास किया गया है। आदिवासी उत्तरदाताओं से अनुसूची के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों की विवेचना निम्नांकित है–ः

क्या आप कम्यूनिटी रेडियो सुनते है ?

अ. हां ब. नहीं स. थोड़ा बहुत

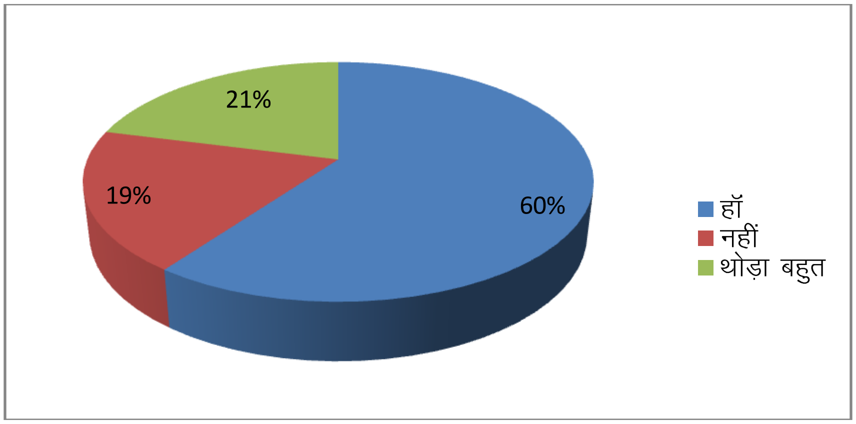

आमतौर पर रेडियो को सबसे ज्यादा सूनने वाला माध्यम कहा गया है। धार जिले के नालछा में आदिवासियों पर किए गए सर्वे में अनुसूची से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार सामुदायिक रेडियो को वहां के 60 प्रतिशत आदिवासी पसंद करते है। रेडियो से उनकी अपनी बोली में प्रसारण होता है। कुछ लोग थोड़ा बहुत रेडियो सूनना पसंद कर रहे है। जिन लोगों के पास रेडियो उपलब्ध नहीं है उन लोगों ने नहीं का जवाब दिया है।

कम्यूनिटी रेडियो पर आप क्या सुनना पसंद करते हो ?

अ. संगीत   ब. नाटक   स. चर्चाएं   द. सभी

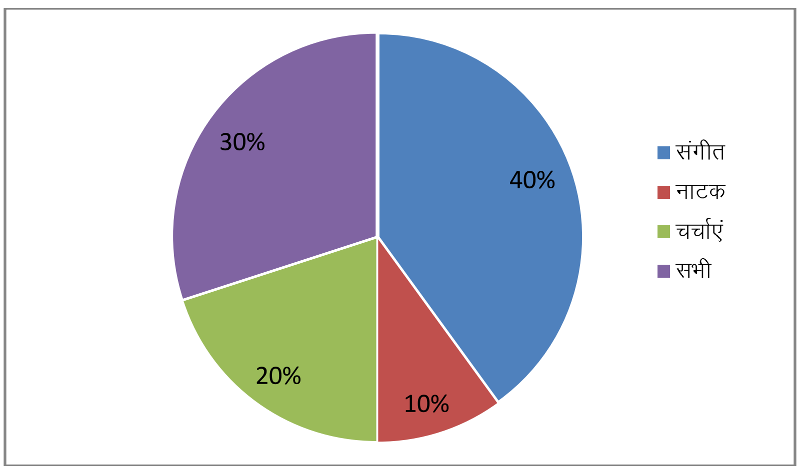

आदिवासियों के पसंदीदा कार्यक्रमों में संगीत या संगीत आधारित कार्यक्रम के श्रोता सार्वाधिक मिले। वहां के 40 प्रतिशत लोग संगीत सुनना पसंद करते है। लगभग 30 प्रतिशत लोगो को नाटक सुनना पसंद है जबकि 20 प्रतिशत को चर्चा पसंद है। वही मात्र 10 फीसदी उत्तरदाता सभी कार्यक्रमों को सुनना पसंद करते है।

किस समय आप कम्यूनिटी रेडियो सुनना पसंद करते हो ?

अ. केवल सुबह ब. केवल शाम को स. कुछ समय द. जब मन करता तब

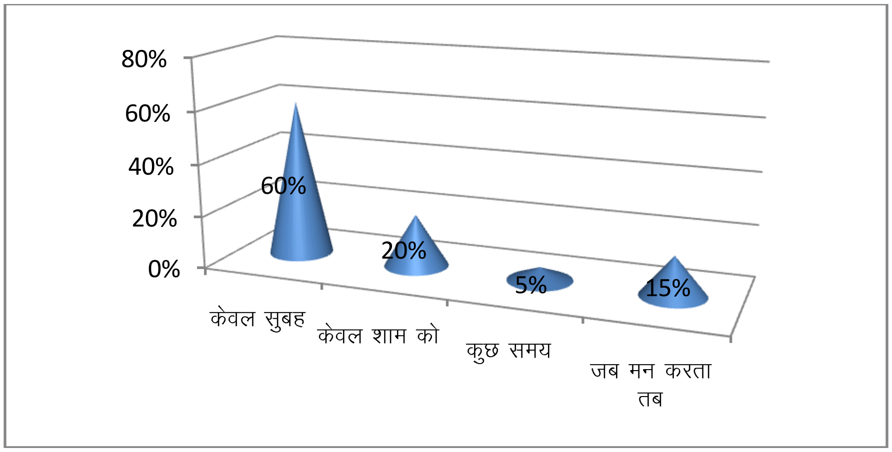

नालछा सामुदायिक रेडियो को 60 फीसदी लोग सुबह में ज्यादा सुनना पसंद करते है। 20 प्रतिशत लोग शाम को सुनना पसंद कर रहे है। कुछ आदिवासी ऐसे भी है जो अपनी मर्जी के अनुसार या उपलब्ध समयानुसार रेडियो को सुनते रहते है।

क्या कम्यूनिटी रेडियो आपके क्षेत्र का लोकप्रिय मनोरंजन का साधन है?

अ. हां ब. नहीं स. थोड़ा बहुत

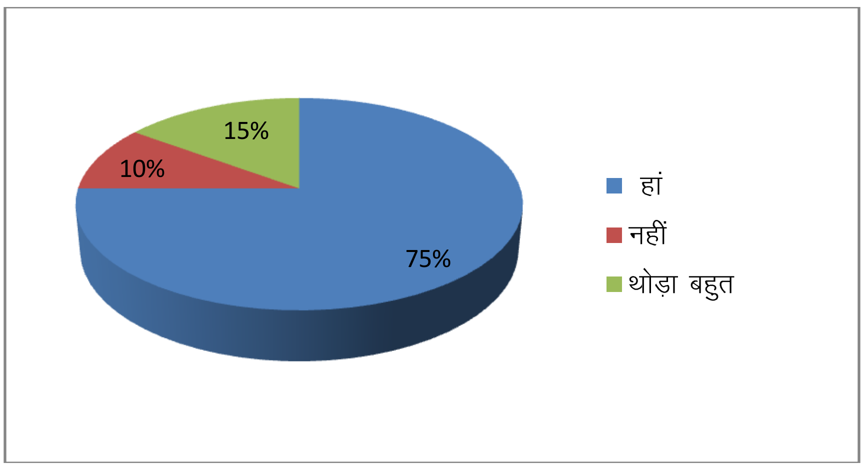

ज्यादातर आदिवासियों का कहना है कि नालछा सामुदायिक रेडियो यहां पर मनोरंजन का साधन है जिसके माध्यम से यहां के लोगों का मनोरंजन होता है। यहां पर ज्यादातर आदिवासी संगीत व चर्चाएं सुनना पसंद करते हैं। साथ ही उनमें जागरूकता भी दिखाई दे रही है आज के समय में वे सामाजिक कुरूतियों से लड़ने के लिए तैयार हो गए है। रेडियो मनोरंजन के साथ यहां पर एक शिक्षक की भी भूमिका निभा रहा है।

कम्यूनिटी रेडियो के कारण लोगों पर क्या प्रभाव पड़ रहे हैं?

अ. सकारात्मक ब. नकारात्मक स. दोनों द. नहीं पता

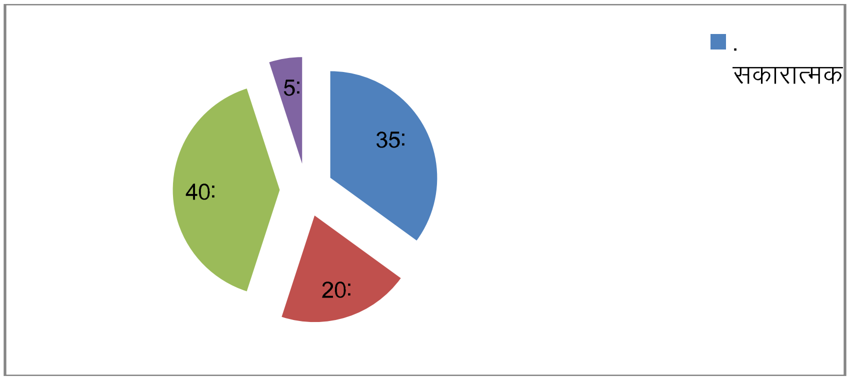

40 प्रतिशत लोगों का कहना है कि यहां पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव दोनों पड़ रहा है क्योंकि सामुदायिक रेडियो यहां पर एक टीचर के रूप में कार्य कर रहा है। कुछ लोग सही रूप में रेडियो कार्यक्रमों को लेते ह, कुछ गलत तरीके से उसको ग्रहण करते हैं। इससे यहां पर ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। फिर भी सामाजिक जागरूकता में रेडियो ने सकारात्मक भूमिका का निर्वहन किया है।

क्या भविश्य में कम्यूनिटी रेडियो आपके लिए लाभकारी साबित होगा?

अ. हां ब. नहीं स. थोड़ा बहुत

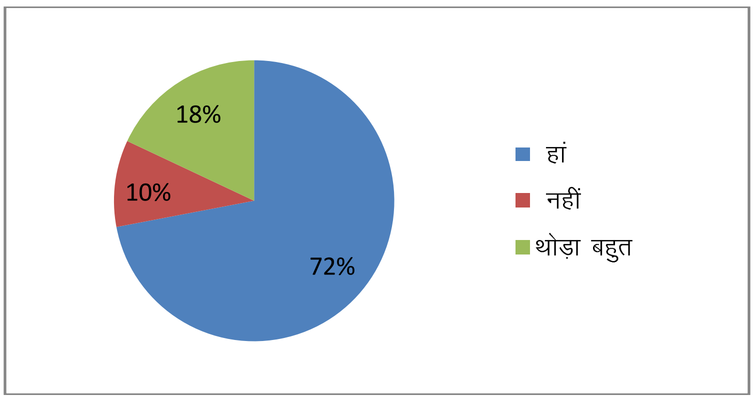

72 प्रतिशत लोगों ने कहा है कि भविष्य में रेडियो हमारे लिए लाभकारी साबित होगा। सामुदायिक रेडियो को सुनना पसंद कर रहे हैं क्योंकि यहां के किसानों का मानना है कि यह हमारा साथी है जो समय–समय पर हमें जानकारी देता रहता है। जहां इसके कारण समाज में जागरूकता बढ़ रही है वहीं लोगों को मनोरंजन का सस्ता साधन भी उपलब्ध हो गया है। हालांकि कुछ का कहना है कि यह लाभकारी नहीं भी हो सकता और इसके हमारे समाज पर नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते है।

कम्यूनिटी रेडियो के अलावा आप किस माध्यम को ज्यादा महत्व देते हो?

अ. टेलीविजन ब. समाचार–पत्र स. आकाशवाणी द. सभी

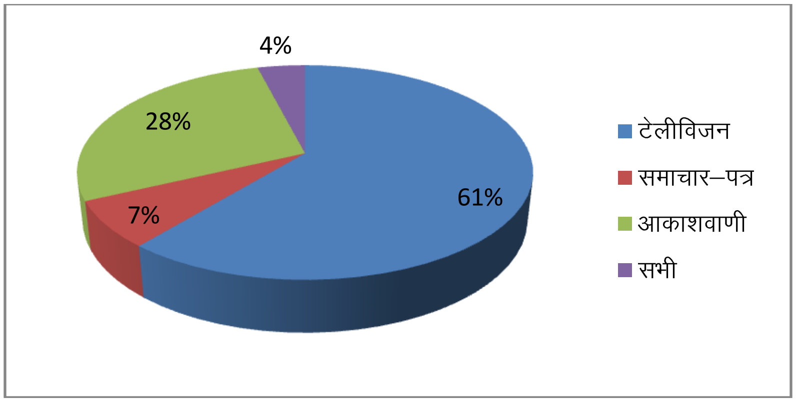

ज्यादातर यहां के लोग टेलीविजन देखना पसंद करते हैं क्योकि फिल्में और विजुअल उन्हें बहुत ही पसंद आते हैं। और सभी फिल्में देखना पसंद करते हैं इसके साथ कुछ शिक्षित लोग अखबार पढ़ते हैं। लगभग 28 फीसदी आदिवासी आकाशवाणी को सुनना पसंद करे हैं क्योंकि उस पर फिल्मी गाने ज्यादा प्रसारित होते हैं कुछ का मानना है कि हम सभी साधनों का उपयोग करते हैं।

आपको जो जानकारी कम्यूनिटी रेडियो के माध्यम से प्राप्त होती है उसे आप अपनी बोली में समझते है या हिन्दी भाशा में ?

अ. बोली में ब. हिन्दी भाषा में स. दोनों में

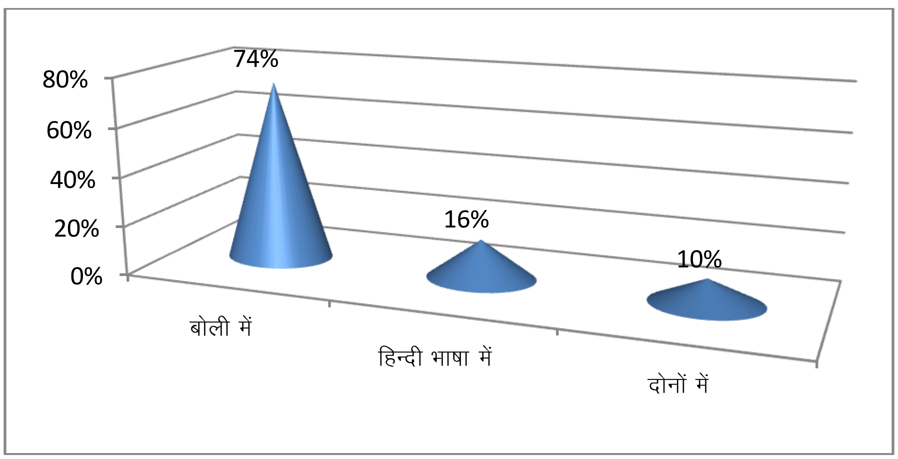

74 प्रतिशत आदिवासी सामुदायिक रेडियो को अपनी बोली में सुनना पसंद करते हैं । कुछ आदिवासी हिंदी में सुनना पसंद कर रहे हैं क्योकि वह धीरे–धीरे अब जागरूक भी हो रहे हैं। 10 प्रतिशत आदिवासी ऐसे भी हैं जो दोनों बोली व भाषा में रेडियो को सुनना पसंद कर रहे हैं।

कम्यूनिटी रेडियो पर जो भी प्रसारण होता है उससे आप सहमत हो ?

अ. हां ब. नहीं स. थोड़ा बहुत द. कह नहीं सकते

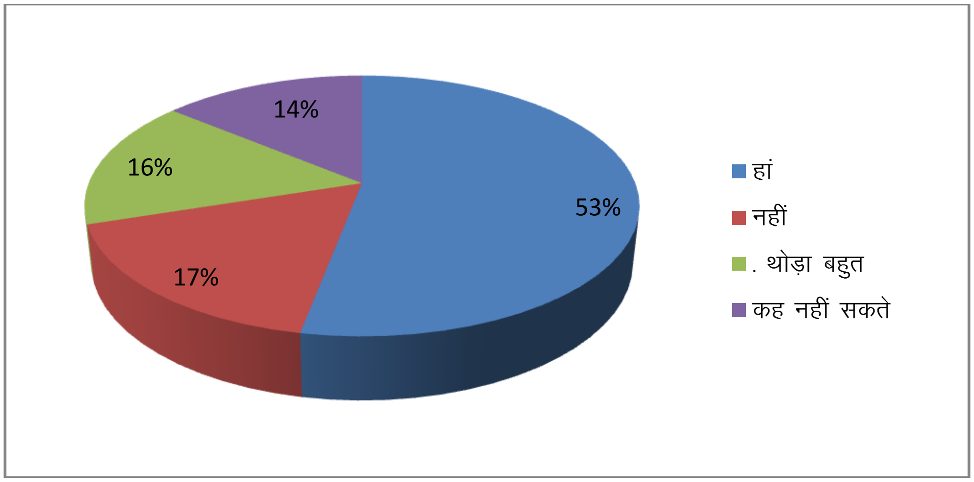

इस रेडियो पर जो भी प्रसारण किया जा रहा है उस पर यहां के लोग लगभग सभी सहमत है जो कि मैंने अपनी प्रश्नावली में किया था। बोली में कार्यक्रमों के प्रसारण के कारण सभी इसे खूब पसंद कर रहे है।

क्या कम्यूनिटी रेडियो पर प्रसारित सरकारी विज्ञापनों से लोग शिक्षित व जागरूक हो रहे है ?

अ. हां ब. नहीं स. थोड़े बहुत द. पता नहीं

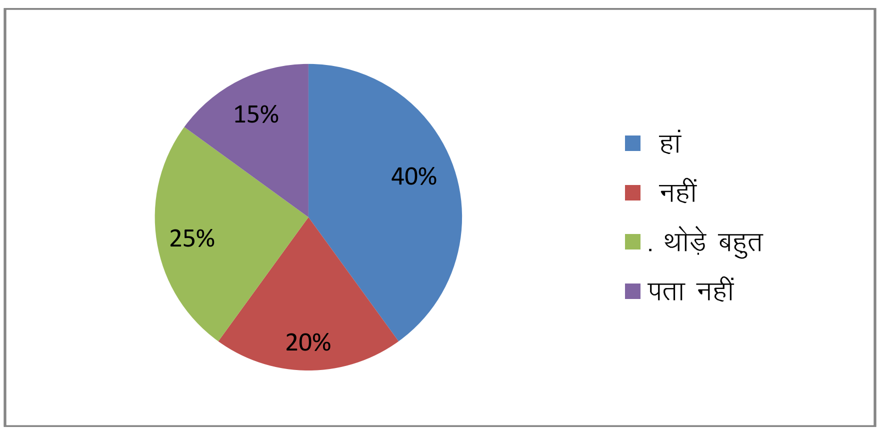

भारत सरकार के विज्ञापन का प्रसारण हिन्दी में होता है और वह उनका मतलब कम समझते है जिसके कारण यहां के लोगों पर विज्ञापनों का कम प्रभाव पड़ता है। इसके लिए उन्हीं की बोली का प्रयोग किया जाना चाहिए। मात्र वे टेलीविजन पर दिखने वाले विज्ञापनों का ही कुछ अर्थ समझ पाते है।

निश्कर्श :

सैंपल सर्वे से प्राप्त आंकड़ों की विवेचना के आधार पर यह आसानी से कहा जा सकता है कि सामुदायिक रेडियो ने आदिवासी समुदाय के विकास में महती भूमिका अदा की है। हालांकि जिस चतुर्दिक विकास की आज बात हो रही है उससे आदिवासी समाज आज भी अछूता है। सकारात्मक पहलू यह है कि क्रमशः उनके जीवन, कार्य–व्यवहार एवं सोचने के तौर–तरीकों में बदलाव दृष्टिगत हो रहे है।

- ❖ सैंपल सर्वे के आधार पर यह कहा जा सकता है कि संचार के बहुतेरे साधन होने के बावजूद भी सामुदायिक रेडियो आदिवासी समाज में मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय माध्यम है। हालांकि अभी इसका चलन नया है फिर भी आदिवासियों में यह लोकप्रिय है। इसके दो कारण हो सकते है–एक तो यह मोबाइल या फिर सस्ते रेडियो सेट के माध्यम से आसानी से सुना जा सकता है और दूसरा, यह पोर्टेबल है। अगर आदिवासियों की पसंद को गौर किया जाएं तो इसमें बहुत कुछ चौंकाने वाले तथ्य नहीं है। ज्यादातर की पसंद स्थानीय बोली के संगीत या संगीत आधारित कार्यक्रम एवं नाटक है जो प्रदर्शित करता है कि श्रोता किया गंभीर विमर्श से ज्यादा मनोरंजन को महत्व देते है। इसके लिए उनकी जीवनशैली भी बहुत हद तक जिम्मेदार है। हालांकि रेडियो केन्द्र अभी ट्रायल के तौर पर कार्य कर रहा है परंतु इसकी लोकप्रियता म प्रतिदिन इजाफा हो रहा है।
- ❖ ज्यादातर आदिवासियों की राय में सामुदायिक रेडियो ने उन्हें मनोरंजन का एक सस्ता एवं सुलभ माध्यम उपलब्ध करा दिया है जो उनकी बोली में प्रसारण करता है। इसके अलावा जो संचार माध्यम उपलब्ध है, वे उनकी आवश्कता एवं समझ के स्तर के अनुरूप नहीं है। आकाशवाणी के कार्यक्रम शुद्ध हिंदी में प्रसारित होते है जिनके कई शब्द समझ से बाहर होते है।
- ❖ इस रेडियो केन्द्र के माध्यम से एक तो आदिवासी संस्कृति का प्रचार–प्रसार हो रहा है। दूसरे उनको स्वास्थ्य, खेती–बारी, शिक्षा संबंधी कई जानकारियां मिल रही है। जिसके कारण से उनकी जीवनशैली एवं कार्य–व्यवहार में कुछ परिवर्तन हुआ है। ऐसा वहां के लोग भी महसूस कर रहे है। पहले की तुलना में उनकी समझ का दायरा तेजी से बढ़ा है और वे बाहरी दुनिया की सूचनाओं से रूबरू हो रहे है। जो भविष्य के लिए एक शुभ संकेत है।
- ❖ सामुदायिक रेडियो के माध्यम से प्रसारित सरकारी विज्ञापनों के माध्यम से भी उनके बीच जागरूकता का प्रसार हो रहा है। हालांकि रेडियो के अलावा दृश्य कार्यक्रमों की उपलब्धता के कारण उनकी बीच टेलीविजन की भी खासी लोकप्रियता है। लेकिन टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों से उनका मनोरंजन तो होता है परंतु स्थानीय बोली में नहीं होने के कारण उनको प्रत्येक संदेश समझ नहीं आता। ऐसे में अगर स्थानीय बोली में टेलीविजन माध्यम की उपलब्धता कराई जा सके तो आदिवासी विकास को नई दिशा दी जा सकती है। साथ ही इससे उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है। जैसा कि कुछ अनुसंधानकर्ताओं का दावा रहा है कि वे अपनी स्थिति से ही खुंश है और उनको किसी भी प्रकार का बदलाव पसंद नहीं। आदिवासियों के साथ संवाद में लगा कि उन अनुसंधानकर्ताओं के ये कथन पूर्णतः मिथक है। क्योंकि यह समाज बदलाव का पक्षधर भी है और विकास को पसंद भी कर रहा है। हां विकास के नाम पर हो रही लूट–मार एवं शोषण से लोग व्यथित जरूर है। परंतु किसी भी प्रकार के सार्थक परिवर्तन का स्वागत करने को भी तत्पर है।

संदर्भ सूचीः

1. नालछा रेडियो केन्द्र समन्वयक मोहन जी का साक्षात्कार।
2. हरिमोहन, डॉ. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली 2006।
3. सिंह, देवव्रत, भारतीय इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 2010।
4. नाथ, अरून्धति, रेडियो की विकास गाथा, योजना, अगस्त 2011।
5. मीडिया विमर्श, सितंबर–नवंबर 2007।
6. www.google.com
7. http://archive.dailypioneer.com/index.php?option=com_k2&view=item&id=3524http://en.wikipedia.org/wiki/Tribals_in_Madhya_Pradesh
8. http://www.ummid.com/news/2011/July/30.07.2011/community_radio_planned_in_mp.htm
9. http://en.wikipedia.org/wiki/Community_radio
10. www.thehoot.org

11. 7:first-korku-community-radio-station-to-go-on-air today&tmpl=component&print=1
12. http://www.ummid.com/news/2011/October/29.10.2011/first_community_radio.htm
13. http://www.radioandmusic.com/content/editorial/news/mp-set-100-tribal-community-radio-stations